हमारी यादगार

पिकनिक

– दीपिका नवरे

कोई दो हफ्ते पहले डॉक्टर अंकल का फोन आया कि इस बार पिकनिक कैरवाँ डैम पर चलेंगे। मैं खुशी से उछल गई। इससे पहले कि डॉक्टर अंकल और बच्चों को खबर करते मैंने 18 फोन कर डाले, सभी टाईप–1 दोस्तों को, जिन्हें मैं जानती हूँ और जिनसे मेरी अक्सर बातचीत होती रहती है। मैंने खुद ही पिकनिक में गेम्स और तम्बोला की जिम्मेवारी अपने पर ले ली। डॉक्टर अंकल ने भी मेरा उत्साह देख सभी से कहना शुरू कर दिया कि इस बार पिकनिक लीडर दीपिका रहेंगी।

सात–आठ ऐसे बच्चों की मम्मियों के फोन मेरे पास आ गये, जिन्हें इसी साल टाईप–1 डॉयबिटीज़ हुई थी। उनके मन में संदेह थे कि क्या फायदा होगा, लोगों को बच्चे की बीमारी का पता चल जायेगा। सुबह इंसुलिन लेकर बच्चा आयेगा कहीं भाग–दौड़ से शुगर कम हो गई तो... आदि–आदि।

मैंने उन्हें समझाया, अपनी मम्मी से बात करायी और फिर भी न माने तो डॉक्टर अंकल से चुगली की कि वो आँटी बच्चे को भेजने के मूड में नहीं हैं जबकि बच्चे का बहुत मन है। डॉक्टर अंकल ने इन सभी

पिकनिक के रंग, टाईप-1 बच्चों के संग

को समझाया कि वहाँ सिर्फ टाईप–1 मधुमेही बच्चे और उनके पैरेंट्स ही रहेंगे। बच्चों की देख–रेख के लिये डॉक्टर रहेंगे। ग्लूकोमीटर व ग्लूकोज़ इंजेक्शन की व्यवस्था रहेगी। फिर भी आँटी लोग नहीं माने तो मुफ्त ग्लूकोमीटर का ऑफर काम कर गया। सच बोलूँ तो पिकनिक के बाद ये बच्चे और अंटियाँ ही सबसे ज्यादा खुश हुये।

मैं पूरे जोश से तैयारी में लग गई। सभी टाईप–1 सहेलियों ने भी मदद की। रोहित भैया (रोहित मिश्रा, नावो नोरडिस्क), प्रशांत भैया (प्रशांत अग्रवाल–एवेंटिस) ने हर कदम पर मार्गदर्शन व मदद की। पिकनिक बिना आर्केस्ट्रा और संगीत के पूरी नहीं हो सकती। हमारे टाईप–1 क्लब के सीनियर सदस्य शकील भैया यहाँ काम आये। जी हाँ, ये वो ही शकील खान हैं जो ''मधुमेह वाणी'' पत्रिका की प्रिंटिंग अपनी प्रेस में करवाते हैं। शकील भैया 23 साल से टाईप–1 मधुमेही हैं और प्रिंटिंग में शानदार बिजनेस कर रहे हैं। उनके दोस्त राजा का आर्केस्ट्रा है। उन्होंने राजा को पिकनिक आने को मना लिया।

सभी को सुबह 9 बजे डॉ. अंकल की क्लीनिक पर इकट्ठा होना था, पर 10 बजे तक भी फोन आते रहे कि बस पहुँच रहे हैं थोड़ा इंतज़ार करें। आखिर डॉ. अंकल ने कहा बस दूसरी ट्रिप करेगी और हम 32 टाईप–1 दोस्त (व अभिभावक) केरवा डैम के लिये रवाना हुये। मैंने कई साल पहले केरवा डैम देखा था। रास्ता बिल्कुल हरियाली से भरा था। बारिश का मौसम था पर किस्मत से उस दिन बारिश नहीं थी, बादल जरूर बहुत छाये थे। यानि कि पिकनिक का परफेक्ट मौसम। दूसरी ट्रिप में दस और बच्चे आये। इस तरह पिकनिक में हम 42 साथी थे।

जाते ही सबको कोल्ड ड्रिंक दिया गया। चौंकिये नहीं हमारे लिये यह विशेष रूप से डाईट कोक था। कई बच्चों को पहली बार पता चला कि डायबिटीज़ होते हुये भी कोल्ड ड्रिंक पी सकते हैं यानि शुगर फ्री डाईट कोक। मम्मियाँ और पापा लोग आपस में बातें करने लगे। एक–दूसरे से अपने अनुभव बाँटने का यह अच्छा मौका था। मैं भी अब टाईप–1 में सीनियर हो गई हूँ। मेरी मम्मी को बहुत–सी रेसीपी आती है, जो हम लोगों के लिये विशेष है। मम्मी ने सभी अंटियों को बताई और कई को फोन पर बताने का वादा किया। नये सदस्यों के मम्मी–पापा के चेहरे पर और अपने जैसे बच्चे देख जो संतोष था वह देखते ही बनता था।

फिर शुरू हुआ गेम्स का सेशन। बीच–बीच में लोगों ने गाने भी सुनाये और चुटकुले भी। मैंने भी गाया और मैंने और मेरी मम्मी ने मिलकर एक ड्यूऐट भी सुनाया। अंकल ने सभी बच्चों को बुलाकर इंट्रोडक्शन भी करवाया। सभी की तकलीफें भी पूछीं और समाधान भी किये।

बीच में एक दौर चाय और भजियों का भी हुआ। लंच में खाना हम लोगों को ध्यान में रखकर बनवाया गया। फिर भी मजा आ गया। खाने के बाद अमूल की शुगर फ्री आईस्क्रीम स्वीट डिश में दी गई। मुझे तो पहली बार पता चला कि हम लोगों के लिये कोई कम्पनी शुगर फ्री आईस्क्रीम भी बनाती है।

पापा–मम्मी लोगों को अलग से बिठाकर एक सेशन भी हुआ। डॉ. एस.एस. येसीकर और डॉ. हरिहर त्रिवेदी ने उनसे उनकी समस्याएँ सुन समाधान किये। मेरा तो कहना है कि हमारे मम्मी–पापा को साईकोथैरेपी की ज्यादा जरूरत है, हम लोग तो अब बहुत स्ट्रांग हो चुके हैं। जब तक उधर पापा–मम्मी सेशन हो रहा था हम नाच–गा रहे थे, राजा भैया के आर्केस्ट्रा पर। फिर हुआ तंबोला। अंकल ने इतनी गिफ्ट रखीं कि सबको कुछ–न–कुछ जीतने का मौका मिला।

आखिर में मनाया जन्मदिन। हमारी सहेली कीर्ति गौर का आज बर्थडे था। कीर्ति ने बड़ा–सा केक काटा। सबसे पहले डॉ. अंकल को खिलाया और फिर डॉ. अंकल ने उसे। हमारे मुँह में भी पानी आ गया। सब खुसुर–फुसर करने लगे – डॉ. अंकल ने कीर्ति को मीठा केक कैसे खिला दिया? डॉ. अंकल ने राज़ खोला – यह केक शुगर फ्री है और सबको केक दिया।

मैं तो यही कहूँगी ऐसी पिकनिक होती रहे। थ्री चियर्स फार डॉ. जिन्दल अंकल। ●●●